Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारत की भौगोलिक स्थिति और आर्थिक विकास

डॉ. विवेक कुमार पटेल* श्री अनबर खान**

* सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (वाणिज्य) शासकीय शहीद केदारनाथ महाविद्यालय, मऊगंज (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक एवं विभाग (भूगोल) शासकीय शहीद केदारनाथ महाविद्यालय, मऊगंज (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत एक विशाल और विविध भौगोलिक संरचना वाला देश है, जिसकी स्थिति आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह शोध पत्र भारत की भौगोलिक विशेषताओं का विश्लेषण करता है और यह दर्शाता है कि किस प्रकार भौगोलिक स्थिति ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित किया है।यह शोध पत्र भारत की भौगोलिक स्थिति और उसके आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करता है। भारत की अद्धितीय भौगोलिक स्थिति – हिमालय से घिरा उत्तर, विशाल तटीय क्षेत्र, विविध जलवायु और संसाधनों की उपलब्धता,इसके आर्थिक विकास के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है।भारत की जलवायु विविधता कृषि को व्यापक रूप से प्रभावित करती है, जो आज भी करोड़ों लोगों की आजीविका का मुख्य स्रोत है। नदी प्रणालियाँ सिंचाई और जल परिवहन के लिए सहायक हैं, जबकि खनिज संसाधनों की उपलब्धता उद्योगों के विकास में योगदान देती है। इसके अलावा, भारत की रणनीतिक स्थिति – विशेष रूप से हिंद महासागर क्षेत्र में,अंतरराष्ट्रीय व्यापार और समुद्री संपर्क को बढ़ावा देती है।हालांकि, भौगोलिक विविधता के कारण क्षेत्रीय असमानता, प्राकृतिक आपदाओं की पुनरावृत्ति, और कुछ इलाकों में बुनियादी ढांचे की कमी जैसे मुद्दे भी सामने आते हैं, जो आर्थिक विकास की गति को प्रभावित करते हैं।

इस शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि भारत की भौगोलिक स्थिति न केवल इसके आर्थिक विकास में सहायक है, बल्कि यह एक रणनीतिक संपत्ति भी है, बशर्ते कि उपलब्ध संसाधनों का समुचित और सतत् उपयोग किया जाए।

प्रस्तावना – भारत, एक विशाल और विविधताओं से भरपूर देश, अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण विश्व मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह देश एशिया के दक्षिण में स्थित है, जो उत्तरी गोलार्ध में $8^0 4'$ उत्तरी अक्षांश से $37^0 6'$ उत्तरी अक्षांश और $68^0 7'$ पूर्वी देशांतर से $97^0 25'$ पूर्वी देशांतर के बीच फैला हुआ है। भारत की यह रणनीतिक स्थिति इसे व्यापार, कृषि, पर्यटन और अन्य आर्थिक क्षेत्रों में अद्धितीय अवसर प्रदान करती है।भूमध्यरेखा के उत्तर में स्थित यह देश हिमालय से लेकर हिंद महासागर तक फैला हुआ है, जिसमें अनेक प्रकार की जलवायु, प्राकृतिक संसाधन, नदी–घाटियाँ, पर्वत, और तटीय क्षेत्र सम्मिलित हैं। यही भौगोलिक विविधता भारत के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भारत की भौगोलिक विशेषताओं ने विभिन्न आर्थिक गतिविधियों जैसे कृषि, उद्योग, व्यापार और सेवा क्षेत्रों को प्रभावित किया है। उदाहरण स्वरूप, गंगा–ब्रह्मपुत्र मैदानों की उर्वर भूमि ने कृषि उत्पादन को बढ़ावा दिया है, वहीं पश्चिमी घाट और तटीय क्षेत्र व्यापार और पर्यटन के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, भारत की रणनीतिक स्थिति एशिया के मध्य में उसे वैश्विक व्यापार और निवेश के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाती है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य भारत की भौगोलिक स्थिति और इसके आर्थिक विकास के मध्य अंतर्संबंध को समझना है। इसके अंतर्गत यह अध्ययन किया जाएगा कि किस प्रकार भौगोलिक कारकों ने क्षेत्रीय असमानताओं, संसाधनों के वितरण, जलवायु प्रभावों और अवसंरचनात्मक विकास को प्रभावित किया है। यह विश्लेषण नीति–निर्माताओं और योजनाकारों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, ताकि भौगोलिक विशेषताओं का प्रभावी उपयोग कर सतत और समावेशी आर्थिक विकास सुनिश्चित किया जा सके।

उद्देश्य:

1. भारत की भौगोलिक स्थिति की विशेषताओं को समझना और उसका आर्थिक विकास पर प्रभाव स्पष्ट करना।
2. विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों (जैसे पहाड़ी, तटीय, मैदानी एवं पठारी क्षेत्रों) में आर्थिक गतिविधियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. यह विश्लेषण करना कि भारत की भौगोलिक विविधता कैसे क्षेत्रीय असमानताओं को जन्म देती है।
4. नीति निर्माताओं को भौगोलिक कारकों के आधार पर क्षेत्रीय विकास की रणनीतियाँ तैयार करने के लिए मार्गदर्शन देना।

पद्धति :

1. **शोध की प्रकृति:** यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है।
2. **डेटा संग्रहण:** द्वितीयक स्रोत:भारत सरकार की आर्थिक रिपोर्ट, भूगोल व आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट, नीति आयोग के दस्तावेज, जनगणना डेटा, वर्ल्ड बैंक और IMF रिपोर्ट।
3. **डेटा विश्लेषण तकनीकें:** सांख्यिकीय विश्लेषण,GIS मैपिंग एवं स्थानिक विश्लेषण,तुलनात्मक क्षेत्रीय विश्लेषण।
4. **अध्ययन की सीमा:** अध्ययन भारत के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में भौगोलिक विशेषताओं और उनके आर्थिक प्रदर्शन पर केंद्रित रहेगा।

1. भारत की भौगोलिक स्थिति का विवरण:

- **उत्तर में हिमालय पर्वत:** हिमालय पर्वत भारत के उत्तर में स्थित है और यह भारत की प्राकृतिक सीमा के रूप में कार्य करता है। हिमालय न केवल

भारत के भूगोल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, बल्कि यह देश की जलवायु को भी प्रभावित करता है। यह विश्व की सबसे ऊंची पर्वतमाला मानी जाती है। यह पर्वत श्रृंखला भारत को चीन, नेपाल, और भूटान से अलग करती है। यह पर्वत श्रृंखला देश के लिए जल स्रोतों का प्रमुख स्रोत है, जैसे गंगा, यमुना, और ब्रह्मपुत्र नदी। इन नदियों का जल भारतीय कृषि के लिए महत्वपूर्ण है।यह क्षेत्र प्राकृतिक सुंदरता, जैव विविधता, और जलवायु के लिहाज से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

- **दक्षिण में भारतीय महासागर:** भारत की दक्षिणी सीमा भारतीय महासागर से घिरी हुई है। यहां के तटीय क्षेत्रों का आर्थिक महत्व अत्यधिक है, क्योंकि ये क्षेत्र समुद्री मार्गों के द्वारा व्यापार और परिवहन का प्रमुख केंद्र हैं। भारत के विभिन्न बंदरगाह जैसे मुंबई, चेन्नई और कोलकाता अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।भारत की समुद्रतटीय रेखा लगभग 7,500 किलोमीटर लंबी है, जो विभिन्न प्रमुख बंदरगाहों को जोड़ती है।
- **पश्चिम में थार मरुस्थल:** थार मरुस्थल भारत के पश्चिमी भाग में स्थित है और यह राजस्थान राज्य के अधिकांश हिस्से में फैला हुआ है। यह मरुस्थल भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे बड़े रेगिस्तानों में से एक है। थार का विशाल विस्तार इसके जलवायु, वनस्पति और जनसंख्या घनत्व पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। यहां की जलवायु अत्यधिक शुष्क है, और यहां की कृषि को जलवायु के अनुसार बहुत विशिष्ट रूप से अनुकूलित किया गया है।
- **पूर्वी क्षेत्र – असम का पठारी और पहाड़ी क्षेत्र:**असम और इसके आस-पास के क्षेत्र भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्वी भाग में स्थित हैं। यह क्षेत्र हिमालय के पहाड़ी क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है और यहां की प्रमुख भौगोलिक विशेषताओं में घने जंगल, नदियाँ (जैसे ब्रह्मपुत्र), और पर्वतीय क्षेत्र शामिल हैं। असम का पठारी क्षेत्र पहाड़ी श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है, जिसमें जैव विविधता और कृषि के लिए उपयुक्त जलवायु है।
- **विविध जलवायु क्षेत्र (आर्द्र, शुष्क, समशीतोष्ण, उष्ण कटिबंधीय):**
- **आर्द्र जलवायु क्षेत्र:** यह क्षेत्र मुख्य रूप से भारत के दक्षिणी और पश्चिमी तटों पर स्थित है। यहाँ का मौसम गर्म और आर्द्र होता है, जिससे कृषि के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। उदाहरण के रूप में, केरल, कर्नाटका, तमिलनाडु और गोवा में आर्द्र जलवायु का प्रचलन है। यहाँ प्रमुख कृषि उत्पादों में चाय, कॉफी, मसाले, और पाम तेल की खेती होती है।
- **शुष्क जलवायु क्षेत्र:** यह क्षेत्र भारत के पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भागों में फैला हुआ है, जैसे कि राजस्थान, गुजरात और हरियाणा के कुछ हिस्से। यहाँ की जलवायु बहुत शुष्क और गर्म होती है, जिसके परिणामस्वरूप जलवायु आधारित कृषि उत्पादों में कमी होती है। हालांकि, यहाँ पर उर्जा उत्पादन (कोयला, तेल, और गैस) और सौर ऊर्जा जैसी ऊर्जा परियोजनाएँ तेजी से विकसित हो रही हैं।
- **समशीतोष्ण जलवायु क्षेत्र:** यह क्षेत्र भारत के मध्य और उत्तर-पूर्वी भागों में स्थित है। यहाँ का मौसम न तो बहुत गर्म होता है और न ही बहुत ठंडा, जिससे कृषि के लिए आदर्श वातावरण मिलता है। यह क्षेत्र अनाज, फल, और अन्य कृषि उत्पादों के लिए उपयुक्त है। उदाहरण के रूप में, पंजाब और उत्तर प्रदेश का अधिकांश हिस्सा समशीतोष्ण जलवायु क्षेत्र में आता है।
- **उष्णकटिबंधीय जलवायु क्षेत्र:** भारत का अधिकांश हिस्सा उष्णकटिबंधीय जलवायु क्षेत्र में आता है, जिसमें गर्म और आर्द्र मौसम होता है। यह जलवायु क्षेत्र विशेष रूप से कृषि के लिए उपयुक्त है, खासकर धान और गन्ने की खेती के लिए। पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, और उत्तर प्रदेश जैसे राज्य उष्णकटिबंधीय जलवायु के तहत आते हैं।

2. भौगोलिक स्थिति का आर्थिक विकास पर प्रभाव:

1. **कृषि पर प्रभाव:** भारत की भौगोलिक स्थिति का कृषि पर गहरा प्रभाव पड़ा है, जिससे देश की आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके विभिन्न पहलुओं को समझते हुए, कृषि प्रणाली की संरचना और उसकी उत्पादकता को देखा जा सकता है।

1. **गंगा और ब्रह्मपुत्र घाटी की उपजाऊ मिट्टी:** भारत की गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों की घाटियां विशेष रूप से उपजाऊ मानी जाती हैं। इन नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ पदार्थ इन क्षेत्रों की मिट्टी को अत्यधिक उर्वर बनाते हैं, जिससे यहां की कृषि उत्पादन क्षमता बहुत अधिक होती है। गेहूं, चावल, और गन्ना जैसे मुख्य कृषि उत्पाद इन क्षेत्रों में मुख्य रूप से उगाए जाते हैं।

2. **मानसून पर आधारित कृषि प्रणाली:** भारत में कृषि प्रणाली प्राय: मानसून पर निर्भर है, जो जून से सितंबर तक के महीनों में भारत के अधिकांश हिस्सों में वर्षा प्रदान करता है। इस वर्षा के द्वारा ही प्रमुख फसलें जैसे चावल, मक्का, दलहन आदि उगाई जाती हैं। हालांकि, मानसून में कोई भी असंतुलन या बदलाव कृषि उत्पादन को प्रभावित कर सकता है, जिससे कृषि आधारित अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

3. **सिंचाई की स्थिति और भूजल स्तर:** भारत में कृषि के लिए सिंचाई की स्थिति में भी भिन्नताएं हैं। जबकि कुछ क्षेत्रों में सिंचाई के लिए नदियों या नहरों का पानी उपलब्ध है, अन्य क्षेत्रों में भूजल पर निर्भरता अधिक है। भूजल स्तर का गिरना और सिंचाई के लिए जल की कमी कृषि उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। ऐसे क्षेत्रों में, जैसे राजस्थान और पंजाब, पानी की कमी और भूमि की उपजाऊ क्षमता में गिरावट कृषि के लिए एक चुनौती बन चुकी है।

2. **उद्योग और खनिज:** भारत की भौगोलिक स्थिति ने इसके आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न क्षेत्रों में खनिज संसाधनों की उपलब्धता, उद्योगों की स्थापना और उनके विकास को प्रभावित करती है। यहां तीन प्रमुख क्षेत्र हैं जिनमें भौगोलिक स्थिति और खनिज संसाधन महत्वपूर्ण हैं:

1. **झारखंड, ओडिशा और छत्तीसगढ़ में खनिज संसाधन:** भारत के पूर्व-मध्य क्षेत्र में स्थित झारखंड, ओडिशा और छत्तीसगढ़ खनिज संसाधनों से समृद्ध राज्य हैं। इन राज्यों में प्रमुख खनिज जैसे कोयला, लौह अयस्क, Bauxite और Maganese पाए जाते हैं। इन खनिजों का उपयोग भारतीय उद्योगों के लिए किया जाता है, जैसे कि स्टील निर्माण, विद्युत उत्पादन और अन्य कच्चे माल की आपूर्ति। इन संसाधनों की उपस्थिति ने इन राज्यों में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा दिया है और यहाँ पर उद्योगों के लिए बुनियादी ढांचा विकसित किया गया है।झारखंडमें झरिया, धनबाद और बोकारो जैसे कोयला और स्टील उद्योग केंद्र स्थित हैं।ओडिशा में भी कोयला और लौह अयस्क की भरमार है, जो स्टील उद्योग के लिए महत्वपूर्ण हैं।छत्तीसगढ़में भी प्रमुख खनिज संसाधन, जैसे कोयला और लौह अयस्क, पाए जाते हैं।खनिज उत्पादनरू 2022 के आंकड़ों के अनुसार, भारत विश्व में कोयला का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। भारत का कुल कोयला उत्पादन लगभग 700 मिलियन टन है।

2. **पश्चिमी भारत में पेट्रोलियम भंडार:** भारत के पश्चिमी तट, विशेषकर

गुजरात और महाराष्ट्र क्षेत्र में पेट्रोलियम और गैस के महत्वपूर्ण भंडार मौजूद हैं। गुजरात में सूरत और भावनगर के आसपास पेट्रोलियम उत्पादन होता है, जो न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है, बल्कि देश के ऊर्जा क्षेत्र में भी अहम योगदान करता है। इन संसाधनों के आधार पर, पश्चिमी भारत में पेट्रोकेमिकल उद्योग और रिफाइनरी उद्योग विकसित हुए हैं।गुजरात में सूरत, भावनगर और कच्छ के क्षेत्र में तेल और गैस उत्पादन के प्रमुख केंद्र हैं।महाराष्ट्रमें भी मुंबई हाई और अन्य समुद्र तटीय क्षेत्रों से तेल उत्पादन होता है।पेट्रोलियम 2021-22 में भारत ने लगभग 32 मिलियन टन पेट्रोलियम का उत्पादन किया और 2022 में भारत का पेट्रोलियम आयात 195 मिलियन टन तक पहुंच गया।

3. हिमालय क्षेत्र में जलविद्युत परियोजनाएँ: भारत के हिमालयी क्षेत्र में जलविद्युत परियोजनाओं के लिए अनुकूल भौगोलिक स्थितियाँ उपलब्ध हैं। इन क्षेत्रों में बहने वाली नदियाँ और जल स्रोतों की प्रचुरता, जैसे कि ब्रह्मपुत्र, गंगा, और सिंधु, जलविद्युत उत्पादन के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर जैसे राज्यों में जलविद्युत परियोजनाओं का निर्माण किया गया है, जो देश की ऊर्जा आपूर्ति में योगदान करते हैं।जलविद्युत भारत की कुल जलविद्युत क्षमता 2023 तक लगभग 46,000 मेगावाट तक पहुँच गई है।

- **परिवहन और व्यापार:** भारत की भौगोलिक स्थिति ने इसके आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, खासकर परिवहन और व्यापार के क्षेत्र में। भारत का भौगोलिक रूप से विविध परिदृश्य, जिसमें तटीय क्षेत्र, पर्वतीय क्षेत्र और उपजाऊ मैदानी क्षेत्र शामिल हैं, ने व्यापारिक संबंधों और क्षेत्रीय संपर्क को विकसित करने में मदद की है। इस संदर्भ में निम्नलिखित बिंदुओं को देखा जा सकता है:

1. तटीय क्षेत्रों में बंदरगाह विकास (मुंबई, कोलकाता, चेन्नई): भारत के तटीय क्षेत्रों में प्रमुख बंदरगाहों का विकास आर्थिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मुंबई, कोलकाता और चेन्नई जैसे प्रमुख बंदरगाहों ने न केवल घरेलू व्यापार को बढ़ावा दिया है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भी भारत का महत्वपूर्ण स्थान सुनिश्चित किया है। ये बंदरगाह निर्यात और आयात के लिए प्रमुख केन्द्र बन गए हैं, जो औद्योगिक और वाणिज्यिक गतिविधियों को सुदृढ़ करते हैं। इन बंदरगाहों के माध्यम से तेल, गैस, और अन्य संसाधनों के आयात-निर्यात में वृद्धि हुई है, जो आर्थिक विकास में सहायक साबित हुई है।मुंबई का बंदरगाह भारत के कुल समुद्री व्यापार का लगभग 40% हिस्सा संभालता है। 2023 में, मुंबई बंदरगाह से 65 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक माल का निर्यात किया गया।कोलकाता बंदरगाह 2022-2023 में 50 मिलियन टन माल का आयात और निर्यात करता है।यह उत्तर-पूर्वी भारत के लिए मुख्य व्यापारिक मार्ग है, खासकर बांग्लादेश और म्यांमार के साथ।चेन्नई बंदरगाह का सालाना कंटेनर थ्रूपुट लगभग 1.8 मिलियन TEUs (Twenty-foot Equivalent Units) है। यह भारत के दूसरे सबसे बड़े कंटेनर बंदरगाह के रूप में जाना जाता है और दक्षिण भारत के समुद्री व्यापार का प्रमुख केंद्र है।

2. रेल और सड़कों का विस्तार: भारत में रेल और सड़क परिवहन का नेटवर्क विस्तृत और उन्नत है, जिससे देश के विभिन्न हिस्सों को जोड़ने में मदद मिलती है। खासकर दूरदराज के क्षेत्रों तक माल और लोगों का आवागमन आसान हुआ है, जिससे व्यापारिक गतिविधियां सुदृढ़ हुई हैं। इसके अलावा, आर्थिक क्षेत्रों तक आसानी से पहुंचने के कारण उद्योगों का विकास हुआ है। सरकार द्वारा नेशनल हाइवे और रेलवे नेटवर्क के विस्तार के प्रयासों से देश के अंदरूनी हिस्सों तक भी व्यापारिक संपर्क सुलभ हुआ है।भारतीय रेलवे नेटवर्क: लंबाई: लगभग 68,000 किलोमीटर,वर्ष 2022 में माल परिवहन: 1000 मिलियन टन,यात्री यातायात: 8 बिलियन यात्री (2022)।

सड़क नेटवर्क: राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई: लगभग 1,40,000 किलोमीटर,ग्रामीण सड़कों की लंबाई: 6 लाख किलोमीटर।

- **पड़ोसी देशों के साथ व्यापार के लिए रणनीतिक स्थिति:** भारत की भौगोलिक स्थिति उसे उसके पड़ोसी देशों के साथ व्यापारिक संबंधों को प्रोत्साहित करने में मदद करती है। भारत के नजदीकी देशों (चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, भूटान, म्यांमार) के साथ व्यापार संबंधों को बढ़ावा देने के लिए रणनीतिक रूप से अनुकूल स्थितियां हैं। भारत की भूमि सीमाएं और समुद्र तटीय रेखाएं इसे क्षेत्रीय व्यापार के एक महत्वपूर्ण केंद्र में बदलती हैं, जिससे द्विपक्षीय और क्षेत्रीय व्यापार को सुदृढ़ किया जा सकता है। इसके अलावा, क्षेत्रीय व्यापार समझौतों और सहयोगों के माध्यम से भारत को अपने आर्थिक विकास को गति देने का अवसर मिला है। भारत ने पड़ोसी देशों के साथ सड़क, रेल और नदी जलमार्गों से संपर्क को मजबूत किया है।

जैसे-भारत-बांग्लादेश: Feni Bridge और कंटेनर रेल सेवा
भारत-नेपाल: Raxaul-Birgunj रेल मार्ग
भारत-म्यांमार: Kaladan मल्टी-मॉडल ट्रांजिट प्रोजेक्ट

1. प्रमुख व्यापारिक भागीदार देश (पड़ोसी): भारत की भौगोलिक स्थिति इसे दक्षिण एशिया के केंद्र में लाती है, जिससे यह पड़ोसी देशों जैसे नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका और पाकिस्तान के साथ व्यापार के लिए एक रणनीतिक केंद्र बनता है।

देश	द्विपक्षीय व्यापार (US$ अरब, 2023)
बांग्लादेश	15
नेपाल	9
श्रीलंका	5.2
भूटान	1.1

स्रोत:भारत सरकार का आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24, नीति आयोग रिपोर्ट

2. व्यापार: भारत की समुद्री स्थिति (अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के बीच) इसे यूरोप, मध्य पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया के बाजारों से जोड़ती है। इसके माध्यम से आयात-निर्यात में तेजी आई है।

भारत का प्रमुख निर्यात (2023):

श्रेणी	निर्यात मूल्य (US$ बिलियन में)
पेट्रोलियम उत्पाद	94
रत्न और आभूषण	39
औषधि	27
कपड़ा और परिधान	16

भारत का प्रमुख आयात (2023):

श्रेणी	आयात मूल्य (US$ बिलियन में)
कच्चा तेल	158
मशीनरी	45
सोना	55
इलेक्ट्रॉनिक सामान	70

स्रोत: भारत सरकार का आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24, नीति आयोग रिपोर्ट

- **पर्यटन और सेवा क्षेत्र:** भारत में पर्यटन और सेवा क्षेत्र का आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है, और यह भौगोलिक विविधता के कारण और भी बढ़ता है।

1. **विविध पर्यावरणीय और सांस्कृतिक स्थल:** भारत की भौगोलिक स्थिति ने इसे विभिन्न पर्यावरणीय और सांस्कृतिक स्थल प्रदान किए हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इसके उत्तर में हिमालय की बर्फीली चोटियाँ हैं, जो पर्वतारोहण, ट्रैकिंग, और साहसिक पर्यटन के लिए प्रसिद्ध हैं। दक्षिण में समुद्र तट, जैसे गोवा और केरल, और पश्चिम में राजस्थान के रेगिस्तान, जो सांस्कृतिक पर्यटन के लिए प्रसिद्ध हैं, इन सभी क्षेत्रों में पर्यटन के अवसर प्रदान करते हैं।भारत में पर्यटन उद्योग का योगदान GDP में लगभग 9% है।2019 में भारत में पर्यटन से 2.1 मिलियन विदेशी पर्यटक आए थे (विश्व पर्यटन संगठन - UNWTO रिपोर्ट)।भारत में घरेलू पर्यटकों की संख्या सालाना 1.8 बिलियन से अधिक होती है (भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के आंकड़े)।

2. **हिमालय, राजस्थान, केरल आदि में पर्यटन उद्योग:** भारत के विभिन्न क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति ने इन क्षेत्रों को पर्यटन के हॉटस्पॉट बना दिया हैरू

हिमालय: हिमालय पर्वत श्रृंखला, विशेष रूप से उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और उत्तर-पूर्वी राज्यों में, साहसिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन (जैसे अमरनाथ, केदारनाथ) और प्राकृतिक सौंदर्य का प्रमुख केंद्र है।

राजस्थान: रेगिस्तान, किलों, महलों और सांस्कृतिक धरोहरों के कारण राजस्थान में पर्यटन को भारी बढ़ावा मिला है। उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर जैसे स्थल पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

केरल: केरल की भौगोलिक स्थिति, जिसमें समुद्र तट, बैकवाटर और हरे-भरे वर्षावन शामिल हैं, इसे भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक बनाती है। 'एलेप्पी', 'मुन्नार', और 'वायनाड' जैसे स्थलों पर पर्यटन उद्योग का विकास हुआ है।

- **IT और सेवाक्षेत्र में महानगरों की भूमिका (बेंगलुरु, हैदराबाद):** भारत के बड़े महानगर, जैसे बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे और मुंबई, आईटी और सेवा क्षेत्र में महत्वपूर्ण केंद्र बन गए हैं। इन शहरों की भौगोलिक स्थिति ने उन्हें वैश्विक स्तर पर व्यापार, शिक्षा, और सेवाएं प्रदान करने के लिए एक आदर्श स्थान बना दिया है।

बेंगलुरु: इसे 'सिलिकॉन वैली ऑफ इंडिया' कहा जाता है, क्योंकि यह आईटी उद्योग का केंद्र बन गया है। यहां की भौगोलिक स्थिति और जलवायु ने इसे एक आदर्श स्थान बना दिया है, जिससे यहां बड़ी संख्या में आईटी कंपनियां स्थापित हैं। बेंगलुरु में लगभग 15,000 से अधिक आईटी कंपनियां स्थित हैं, जो लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करती हैं।

हैदराबाद: हैदराबाद भी IT हब के रूप में विकसित हुआ है, और यहां का आर्थिक विकास इनकी सेवा क्षेत्रों में योगदान के कारण हुआ है। हैदराबाद की भौगोलिक स्थिति ने इसे एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र बना दिया है, जहां स्वास्थ्य देखभाल, बायोटेक्नोलॉजी, और अन्य सेवाएं तेजी से विकसित हो रही हैं।हैदराबाद का IT क्षेत्र 2022 में लगभग 1.5 लाख करोड़ रुपये का व्यापार कर चुका था, जो भारत के सबसे बड़े आईटी हब में से एक है (नैसकॉम रिपोर्ट)।

3. **क्षेत्रीय विषमता और चुनौतियाँ:** भारत एक विविध भौगोलिक स्वरूप वाला देश है, जहाँ मैदान, पहाड़, मरुस्थल, समुद्री तट और जंगल सभी शामिल हैं। यह विविधता जहाँ एक ओर संसाधनों का खजाना है, वहीं दूसरी ओर आर्थिक विकास में असंतुलन और क्षेत्रीय विषमता का कारण भी बनती है। इस शोध पत्र में हम विशेष रूप से उत्तर-पूर्वी भारत, मरुस्थलीय व पर्वतीय क्षेत्रों की विकास संबंधी समस्याओं और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का विश्लेषण करेंगे।

- **उत्तर-पूर्व भारत में विकास की कमी:**उत्तर-पूर्व भारत की भौगोलिक स्थिति अपेक्षाकृत अलग-थलग है। यह क्षेत्र केवल सिलीगुड़ी कॉरिडोर (चिकन नेक)द्वारा शेष भारत से जुड़ा हुआ है, जो रणनीतिक रूप से संवेदनशील है। उत्तर-पूर्व भारत में आर्थिक विकास की गति अपेक्षाकृत धीमी रही है, इसके प्रमुख कारण हैं:

प्राकृतिक बाधाएँ: पहाड़ी और घने जंगल, जिससे अधोसंरचना विकास मुश्किल होता है।

जलवायु: भारी वर्षा और बाढ़ की स्थिति, जिससे कृषि प्रभावित होती है। सीमावर्ती स्थितिरूबांग्लादेश, चीन, म्यांमार और भूटान की सीमाएं लगती हैं, जो सुरक्षा के दृष्टिकोण से चुनौतीपूर्ण हैं।

अधोसंरचना की कमी: सड़कों, रेलवे और हवाई सेवाओं की अत्यधिक कमी।

उद्योग और निवेश की कमी: बाहरी निवेशकों की अनिच्छा, अस्थिरता और अफसरशाही।

शिक्षा और स्वास्थ्य में पिछड़ापन:साक्षरता दर और स्वास्थ्य सेवाओं की सीमाएं।

आंतरिक संघर्ष और असुरक्षा: उग्रवाद, अलगाववादी आंदोलन और सामाजिक अस्थिरता।

प्राकृतिक आपदाएँ: बाढ़, भूस्खलन, और जलवायु परिवर्तन के असर।

आर्थिक विकास की स्थिति

राज्य	प्रति व्यक्ति आय (2022-23 रू में)	भारत की औसत तुलना (%)	गरीबी रेखा से नीचे जन-संख्या (%)
असम	रू 95,283	69%	31.98%
मणिपुर	रू 82,431	60%	36.89%
मेघालय	रू99,000	72%	30.87%
मिजोरम	रू1,37,000	99%	18.40%
नागालैंड	रू1,10,000	80%	25.23%
त्रिपुरा	रू1,20,000	87%	23.45%
अरुणाचल प्रदेश	रू 1,25,000	90%	22.11%
सिक्किम	रू3,05,000	221%	8.19%
भारत (औसत)	रू1,38,000	100%	22%

स्रोत: भारत सरकार का आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24, नीति आयोग रिपोर्ट

- **मरुस्थलीय और पर्वतीय क्षेत्रों में अवसंरचना की सीमाएँ:**राजस्थान का थार मरुस्थल और हिमालयी क्षेत्र जैसे जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड आदि क्षेत्रों में भौगोलिक बाधाओं के कारण अवसंरचना विकास धीमा है।

1. **मरुस्थलीय क्षेत्रों -**

जल की कमी:थार मरुस्थल में औसतन वर्षा मात्र 100-200 मिमी/वर्ष होती है। राजस्थान के कई मरुस्थलीय जिलों में भूमिगत जल स्तर 40 मीटर से नीचे चला गया है।

परिवहन की कमी: सीमित सड़क नेटवर्क और रेलवे पहुँच।

ऊर्जा आपूर्ति की अस्थिरता

शिक्षा और स्वास्थ्य केंद्रों की कमी

2. **पर्वतीय क्षेत्रों:** लद्दाख में प्रति 1000 वर्ग किमी पर केवल 13 किमी सड़क नेटवर्क है (2022), जबकि भारत का औसत 142 किमी है।हिमाचल प्रदेशमें लगभग 60% क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं है (TRAI रिपोर्ट, 2022)

1. **भूस्खलन और भूकंप की प्रवृत्ति**
2. **संकरी और कठिन भू-आकृति**
3. **प्रौद्योगिकी और निवेश की कमी**
4. **आवागमन की समस्याएँ**

- **जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएँ:** जलवायु परिवर्तन ने विशेष रूप से पर्वतीय और तटीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति बढ़ा दी है।बाढ़, भूस्खलन, चक्रवात, सूखा आदि में वृद्धि, NMDA के अनुसार, भारत में औसतन हर साल 7 प्रमुख चक्रवात आते हैं, जिनमें से पूर्वी तट सर्वाधिक प्रभावित होता है।2023 में उत्तराखंड में 380 भूस्खलन की घटनाएँ दर्ज की गईं।कृषि और आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव,विस्थापन और प्रवास की समस्याएँ ।भारत में जलवायु परिवर्तन के कारण GDP में 2.5% तक की गिरावट अनुमानित है (World Bank रिपोर्ट, 2021)।

4. नीति और समाधान:

- **क्षेत्रीय संतुलन हेतु विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ):** भारत की भौगोलिक विविधता आर्थिक असमानता का एक प्रमुख कारण रही है। विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) इन असमानताओं को दूर करने का एक सशक्त माध्यम बन सकते हैं यदि उन्हें रणनीतिक रूप से नियोजित और निष्पादित किया जाए। नीति निर्माताओं को चाहिए कि वे SEZ की योजना बनाते समय क्षेत्रीय आवश्यकताओं, पर्यावरणीय स्थायित्व और सामाजिक समावेशन को ध्यान में रखें।कुल अधिसूचित SEZs: 379,चालू SEZs: 270+,सर्वाधिक SEZ वाले राज्य: तमिलनाडु (50), तेलंगाना, महाराष्ट्र, कर्नाटक।पूर्वोत्तर राज्यों जैसे मणिपुर और मिजोरम में प्रस्तावित SEZ से निवेश को बढ़ावा मिला है।पिछड़े जिलोंजैसे छत्तीसगढ़ के बस्तर में SEZ से स्थानीय रोजगार को बढ़ावा मिला।लघु और मध्यम उद्योगों (MSME)को वैश्विक बाजार तक पहुँच मिली है।

विश्लेषण सारणी

राज्य	SEZ की संख्या	कुल निवेश (रू करोड़)	रोजगार
तमिलनाडु	53	रू 57,000+	5.2 लाख
महाराष्ट्र	50	रू 48,000+	4.8 लाख
उत्तर प्रदेश	21	रू 18,000+	1.5 लाख
ओडिशा	9	रू 7,000+	0.6 लाख
झारखंड	2	रू1,200+	0.1 लाख

(स्रोत: वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

- **स्मार्ट सिटी और भारतमाला परियोजना:** भारत की भौगोलिक विविधता उसकी सबसे बड़ी ताकत है। यदि सही नीति और योजनाओं से इस स्थिति का दोहन किया जाए, तो देश आर्थिक दृष्टि से तेजी से विकसित हो सकता है। स्मार्ट सिटी मिशन और भारतमाला परियोजना जैसे कार्यक्रम इस दिशा में एक सशक्त प्रयास हैं, जो आर्थिक विकास और सामाजिक समावेशन को एक साथ आगे बढ़ाते हैं।भौगोलिक संसाधनों काक्षेत्रीय स्तर पर इष्टतम उपयोग,स्मार्ट सिटी मेंग्रीन इन्फ्रास्ट्रक्चर और सौर ऊर्जा का अधिकतम समावेश,भारतमाला के साथरेल और जलमार्गों का समेकित विकास, PPP मॉडल (पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप) को और सशक्त करना

1. **स्मार्ट सिटी:** 'स्मार्ट सिटी' एक ऐसा शहरी विकास दृष्टिकोण है जिसमें आधुनिक तकनीक, सूचना एवं संचार तकनीक (ICT), और टिकाऊ विकास के सिद्धांतों का उपयोग करके जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने का प्रयास किया जाता है।भारत सरकार ने 2015 मेंस्मार्ट सिटी मिशनकी शुरुआत की थी, जिसका उद्देश्य 100 शहरों को स्मार्ट बनाना था।

कुल चयनित स्मार्ट शहर	100 शहर
कुल अनुमानित निवेश	रू2,05,000 करोड़
पूर्ण हुई परियोजनाएँ	7,000+ परियोजनाएँ
चल रही परियोजनाएँ	5,000+ परियोजनाएँ
सबसे अधिक प्रगति वाले शहर	इंदौर, सूरत, भुवनेश्वर, पुणे

(स्रोत: वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

2. **भारतमाला परियोजना:** 2017 में लॉन्च की गई यह परियोजना भारत मेंसड़क नेटवर्क को मजबूतकरने के लिए शुरू की गई थी, खासकरआर्थिक गलियारों, सीमा क्षेत्रों, औरपोर्ट कनेक्टिविटीपर ध्यान देते हुए।राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास।लॉजिस्टिक दक्षता में सुधार।राज्यों को इंटर-कनेक्ट करना।बॉर्डर और इंटरनेशनल कनेक्टिविटी।

भारतमाला परियोजना

बिंदु	आँकड़े
टारगेटेड हाईवे लंबाई	83,677 किमी
फेज-1 निर्माण लक्ष्य	34,800 किमी
अब तक पूरा हुआ	23,500 किमी
कुल अनुमानित लागत (फेज-1)	रू 5.35 लाख करोड़
खर्च हो चुका	रू2.25 लाख करोड़

(स्रोत: परिवहन मंत्रालय, भारत सरकार)

- **हरित ऊर्जा और जल प्रबंधन:** भारत की भौगोलिक विविधता उसकी आर्थिक प्रगति का आधार है, और यदि इसे सुनियोजित नीति व समाधान के साथ जोड़ा जाएकृजैसे कि हरित ऊर्जा, जल प्रबंधन विकास,तो भारत न केवल तेज आर्थिक वृद्धि कर सकता है, बल्कि सतत और समावेशी विकास का भी मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

1. **हरित ऊर्जा :** हरित ऊर्जा जैसे सौर, पवन, जलविद्युत और बायोएनेर्जी स्रोत न केवल पर्यावरण-संरक्षण में सहायक हैं, बल्कि आर्थिक विकास को भी गति प्रदान करते हैं।भारत अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी बनता जा रहा है। IRENA (International Renewable Energy Agency) की रिपोर्ट के अनुसार, 2022 में भारत में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में6 लाख से अधिक रोजगारउत्पन्न हुए।ऊर्जा आयात पर निर्भरता कम होती है, जिससे विदेशी मुद्रा की बचत होती है।ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और ऊर्जा आपूर्ति की उपलब्धता बढ़ती है।निजी और विदेशी निवेश को आकर्षित करता है।

स्रोत	क्षमता (मार्च 2024 तक)
सौर ऊर्जा	72 GW
पवन ऊर्जा	44 GW
बायोमास	10 GW
जलविद्युत	47 GW

स्रोत-IRENA (International Renewable Energy Agency)

राष्ट्रीय सौर मिशन: 2030 तक 500 GW गैर-जीवाश्म ऊर्जा लक्ष्य
अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA): भारत की अगुवाई में स्थापित

2. **जल प्रबंधन:** जल एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है। कृषि, उद्योग, और शहरी क्षेत्रों में इसके कुशल प्रबंधन से सतत आर्थिक विकास संभव होता है।जल संकट भारत की आर्थिक और सामाजिक स्थिरता के लिए एक बड़ा खतरा है।2023 तक लगभग 13 करोड़ से अधिक ग्रामीण घरोंको नल जल कनेक्शन मिला।गंगा नदी की जल गुणवत्ता में 40% सुधार दर्ज किया गया है।

जल जीवन मिशन (2020): हर घर को नल से जल आपूर्ति
नमामि गंगे कार्यक्रम: गंगा की सफाई और पुनर्जीवन
अटल भूजल योजना: भूजल प्रबंधन हेतु समुदाय आधारित पहल

निष्कर्ष : भारत की भौगोलिक स्थिति न केवल उसके प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता को निर्धारित करती है, बल्कि यह उसकी आर्थिक गतिविधियों, व्यापारिक संबंधों और क्षेत्रीय विकास की दिशा को भी प्रभावित करती है। हिमालय से लेकर तटीय क्षेत्रों तक और थार मरुस्थल से लेकर पूर्वोत्तर के वर्षा-प्रधान इलाकों तक, भारत की भौगोलिक विविधता उसे एक विशिष्ट आर्थिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है।

देश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार की जलवायु, भूमि संरचना और संसाधनों की उपलब्धता के कारण कृषि, उद्योग, व्यापार और सेवा क्षेत्रों का विकास भी असमान रूप में हुआ है। उदाहरण स्वरूप, गंगा के मैदानों में उच्च कृषि उत्पादकता देखी जाती है, जबकि पश्चिमी भारत में खनिज आधारित उद्योगों का प्रभुत्व है। दक्षिण भारत के तटीय क्षेत्रों में बंदरगाहों और आईटी उद्योगों का विकास, वैश्विक संपर्कों को बढ़ावा देता है।

हालांकि, यह भी स्पष्ट है कि देश की भौगोलिक असमानता कई बार आर्थिक विषमता को जन्म देती है। पहाड़ी और जनजातीय क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे की कमी, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, तथा निवेश की सीमाएं इन क्षेत्रों को मुख्यधारा की आर्थिक गति से पीछे रखती हैं।

इसलिए, भारत के सतत और समावेशी आर्थिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि नीति-निर्माता भौगोलिक कारकों को ध्यान में रखते हुए क्षेत्रीय योजनाएँ बनाएँ। संसाधनों का संतुलित दोहन, परिवहन और संचार नेटवर्क का विस्तार, और पर्यावरणीय संतुलन को ध्यान में रखकर योजनाएं बनाना अत्यंत आवश्यक है।

अंततः, भारत की भौगोलिक स्थिति उसकी सबसे बड़ी ताकत बन सकती है, बशर्ते उसका उपयोग रणनीतिक, वैज्ञानिक और समावेशी दृष्टिकोण से किया जाए। तभी भारत न केवल आर्थिक महाशक्ति बनने की दिशा में आगे बढ़ सकेगा, बल्कि सामाजिक और क्षेत्रीय संतुलन भी स्थापित कर पाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भारत का भूगोल - गोपाल सिंह
2. भारतीय आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24
3. योजना आयोग रिपोर्टस
4. Ministry of Environment and Forests (MoEF), भारत सरकार
5. आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक (EPW)
6. IRENA (International Renewable Energy Agency)
7. परिवहन मंत्रालय, भारत सरकार रिपोर्ट
8. वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार रिपोर्ट
9. भारत सरकार का आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24,
10. नीति आयोग रिपोर्ट

****